डॉ. शिवकुमार पाण्डेय
कुलपति

Dr. S.K.Pandey
Vice-chancellor

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), भारत
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.), INDIA
Office : +91-771-2262857, Fax : +91-771-2263439
E-mail : vc_raipur@prsu.org.in
Website : www.prsu.ac.in

स्वर्ण जयंती वर्ष Golden Jubilee Year 2013-14

पत्र क्रमांक/ 2141 /कु.स./2016
रायपुर दिनांक 31 मई, 2016

प्रति,

संपादक,
दैनिक समाचार–पत्र ————————————
रायपुर

प्रिय महोदय,

विगत कई वर्षों से प्रायः यह देखा जा रहा है कि समाचार–पत्रों में प्रकाशित विश्वविद्यालय से संबंधित अधिकांश खबरें विश्वविद्यालय के लिए नकारात्मक होती हैं, जबकि तथ्यात्मक रूप से ऐसी खबरें शत–प्रतिशत सही नहीं होती। ऐसे भ्रामक एवं तथ्यहीन समाचार प्रकाशित होने से विश्वविद्यालय की गरिमा धूमिल होने के साथ–साथ समाज में विश्वविद्यालय के प्रति गलत धारणा पैदा होती है, जिसकी भरपाई करना भविष्य में कठिन हो जाती है। ऐसे अर्ध्यसत्य खबरों का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विश्वविद्यालय से जुड़े संस्थाओं से पढ़कर निकले युवा–पीढ़ी को भुगतना पड़ता है।

विश्वविद्यालय शिक्षा का उच्चतम केन्द्र है। जहां एक ओर यह युवाओं को सशक्त कर समाज में प्रतिष्ठित करने का केन्द्र है, वहीं दूसरी ओर इसके स्थापन और संचालन में जनभावना, आकांक्षायें जुड़ी हुई है। अतः विश्वविद्यालय को महिमा मंडित भले ही न करें, लेकिन इसकी गरिमा एवं प्रतिष्ठा को बनाए रखने की जवाबदारी जनसामान्य की भी होती है, चाहे वह छात्र हो या अधिकारी/कर्मचारी हो, जनसमूह हो या फिर मीडिया हो, क्योंकि सभी इससे जुड़े हैं। सभी का सरोकार समाज द्वारा, समाज के लिए स्थापित विश्वविद्यालय से है और होना ही चाहिए, यदि एक विश्वविद्यालय को इसकी सार्वभौम स्वरूप प्रदान किया जाना है।

विश्वविद्यालय से संबंधित ऐसे तथ्यहीन एवं भ्रामक समाचारों के प्रति विश्वविद्यालय हर खबर पर अपना प्रतिक्रिया दे पाए यह संभव नहीं है, और न ही ऐसा करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता में है। लेकिन सच्चाई यह है कि ऐसे खबरों को यदा–कदा सभ्य–समाज के साथ–साथ विश्वविद्यालय से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी जनसामान्य एवं उच्च पदों पर आसीन प्राधिकारियों द्वारा संज्ञान लिए जाने की स्थिति में विश्वविद्यालय के लिए विषम परिस्थिति खड़ी हो जाती है।

उपरोक्त के मद्देनजर आपसे विनम्र आग्रह है कि विश्वविद्यालय से संबंधित खबरों के प्रकाशन के पूर्व इसकी शत–प्रतिशत सत्यता का सत्यापन हो, ताकि विश्वविद्यालय की गरिमा अनावश्यक धूमिल होने से बचाया जा सके। इसका यह कतई अर्थ न लगाया जाय कि विश्वविद्यालय स्तर पर जो गलतियां, या जो छात्रों की समस्याएं, या इससे जुड़े हुए अन्य जनसामान्य की समस्याओं का प्रकाशन आपके अखबार में न हो। विश्वविद्यालय इतना ही चाहता है कि कम से कम ऐसी खबरें प्रकाशित न हो, जो सत्य से परे, भ्रामक या तथ्यहीन तथा छवि धूमिल करने वाली हों, जिससे विषम परिस्थिति निर्मित हो जाती हों, जो भविष्य में गंभीर संकट उत्पन्न कर सकता है। इससे बचा जाना उचित होगा।

मुझे विश्वास है कि आप इसे गंभीरता से लेंगे, ताकि हम सभी संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जनआकांक्षाओं के अनुरूप युवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में अपनी प्रमाणिकता सिद्ध कर सकें।

भवदीय,

(डॉ.एस.के.पाण्डेय)